मौजूदा हालत पर एक अहम पैगाम

मुफती अहमद खानपुरी दब

सबसे पहले हमे अपने जहन मे इस हकीकत को जान लेना चाहिए कि दुनिया मे जो भी वाकियात और हालात पेश आ रहे हे इन सब का जाहिर होना अल्लाह के हुकम और फैसले से हो रहा हे, हर मुस्लमान का ये अकीदा होता हे कि दुनिया मे जो कुछ वाकियात और अच्छे बुरे हालात पेश आते हे अल्लाह के हुकम और इरादे से पेश आते हे, अच्छी और बुरी तकदीर पर ईमान लाना उन बुनियादी अकीदो मे से हे जिनको माने और इकरार किये बगैर कोई शख्स मुस्लमान नही हो सकता.

हुजूर ﷺ ने फरमाया कोई इंसान उस वकत तक मोमिन नही हो सकता जब तक वो अच्छी और बुरी तकदीर पर ईमान ना लाये, और इस बात का यकीन ना करले कि उसे जो चीज पोहंची वो इस्से टल नही सकती और जो चीज उसे नही पोहंची वो उसे नही पोहंच सकती. इस हकीकत को समज लेने के बाद कि

दुनिया मे जो कुछ वाकियात और हालात पेश आ रहे हे अल्लाह के हुकम और फैसले से पेश आ रहे हे.

मौजूदा हालात का इस्लामी हल

अल्लाह का इरशाद हे

सुरे यूनुस|१०७ और अगर अल्लाह तुजे कोई तकलीफ पोहचा दे तो कोई उसको दूर करने वाला नही सिवाये खुद उसीके, और अगर तुजे कोई राहत पोहचाना चाहे तो कोई उसके फजल को हटाने वाला नही हे, वो अपना फजल अपने बन्दो मे से जिस पर चाहे कर दे वो बडा मगफिरत वाला बडा रहमत वाला हे.

सुरे अश-शूरा|३०,३१ और जो भी मुसीबत तुम्हे पोहंचती हे वो तुम्हारे हाथो किये हुवे से पोहंचती हे और (अल्लाह) बहुत से तो दरगुजर कर देता हे और तुम जमीन के किसी हिस्से मे भी हरा नही सकते और तुम्हारा अल्लाह के सिवा कोई भी कारसाज हे ना मददगार.

सुरे रूम|४१ बलाये फैल पडी हे खुशकी और तरी मे लोगो के करतूत से, इस वजह से कि अल्लाह उन्के
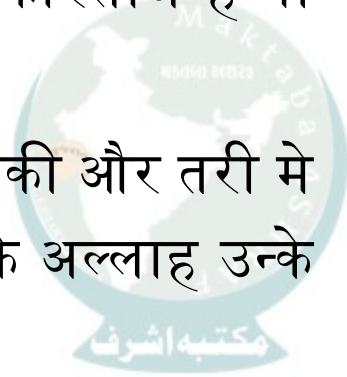
कुछ आमाल का मजा उन्को चखाये ताकि वो लोग बाज आ जाए.

सुरे तहरीम|८ ए ईमान वालो अल्लाह के आगे सच्ची पक्की तौबा करो, उम्मीद हे कि तुम्हारा परवरदिगार तुमसे तुम्हारे गुनाह दूर करदे (यानी माफ कर दे).

सुरे अनआम|४३ उन्होने ऐसा क्यों नही क्या कि जब उन्के ऊपर हमारी तरफ से सख्ती आयी तो वो हमारे सामने आजिजी से जुक पडते? मगर ये कैसे मुमकिन था उन्के दिल तो सख्त हो चुके हे, और शैतान ने उन्को मुतमईन कर दिया हे कि जो कुछ तुम कर रहे हो बहुत ठीक कर रहे हो.

सुरे अन्फाल|३३ और ना अल्लाह उनपर अजाब लाने वाला हे इस हाल मे कि वो इस्तिगफार कर रहे हो.

सुरे जुमर|५४ और तुम अपने रबकी तरफ रूजू करो और तुम उस (अल्लाह) के फरमाबरदार बन जाओ इससे पेहले के तुम पर अजाब आ पहोंचे, फिर तुम लोगों की मदद नही कि जाऐगी.

हदीसो मे इरशाद हे

कजा व कदर को दुवा ही हटा सकती हे, उम्र मे इजाफा नेकियो ही के जरीये होता हे. (तिरमिजी).

हजरत अब्बू दरदा रदी से रिवायत हे कि नबी ने फरमाया बे-शक अल्लाह फरमाते हे मे अल्लाह हु मेरे सिवा कोई माबूद नही, मे बादशाहो का मालिक हु, बादशाहो का बादशाह हु, बादशाहो के दिल मेरे हाथ मे हे, बन्दे जब मेरी इतात करते हे तो बादशाहो के दिल उनपर रहमत और मेहरबानी के लिए फेर देता हु, और जब मेरी ना-फरमानी करते हे तो बादशाहो के दिल उन पर गुस्सा और बदले के लिए फेर देता हु, जिस्से वो उन्को सख्त अजाब और तकलीफे पोहचाने लगते हे इसलिये तुम बादशाहो के लिए बद-दुवा मे मशगुल होने के बजाय मेरे जिक्र की तरफ मुतवज्जा हो, और मेरी तरफ आजिजी और रोया करो, ताकि मे उनकी तकलीफो से तुम्हे मेहफूज रखू.

इन कुरान की आयतो पर गोर करने से साफ तौर पर मालूम होता कि हमारी मुसीबतो और मुश्किलो का

राज खुद हमारे आमाल मे छुपा हुवा हे, हमारी बद-आमालीयो और दीन से दूरी ने हमे ये दिन दिखाये, इन मुसीबतो और मुश्किलो का पक्का और मजबूत इलाज यही हे कि हम लोग अपनी जिन्दगी को दरूस्त कर ले, अगर हम इन्फिरादी और इजतिमायी जिन्दगी की इस्लाह नही करते और इस्लामी तालीमात की बुनियादो पर समाज की तामीर नही करते तो उन आफतो और मुश्किलो की शिकायत का हमे कोई हक नही हे.

और हदीसो से दो बाते सामने आती हे एक बात ये कि कायनात का पैदा करने वाला ही सब का परवरदिगार हे, उसी की कुदरत मे सब कुछ हे, दुनिया मे जो भी वाकियात और हालात पेश आते हे वो सब उसके फैसलें और इरादे से होते हे, वो बादशाहो का आका और बादशाहो का बादशाह हे, तमाम बादशाहो के दिल उसके कबजे मे हे, जिस तरफ चाहता हे उन्हे फेर देता हे.

इस्का मतलब हे कि जब मेरे बन्दे मेरी इतात करते हे तो मे इन हुकमरानो का दिल उन्के हक मे रहमत
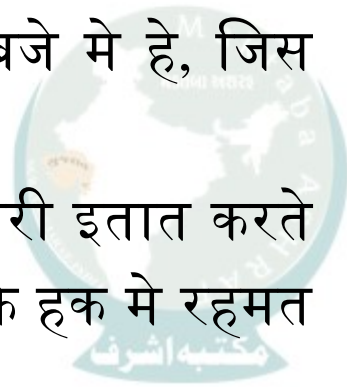
और शफक्कत से भर देता हु, और जब मेरे बन्दे मेरी ना-फरमानी करते हे, मेरे हुकमो की खीलाफ वरजी करते हे तो मे उन्के बादशाहो के दिल मे उन्के खीलाफ गुस्सा और नफरत भर देता हु, फिर वो उन्हे मेरे अजाब का मजा चखाते हे.

खुलासा- क्या ये हकीकत नही हे कि आज इस्लाम हमारे मुआशरे मे अजनबी बना हुवा हे उसे जिन्दगी के तमाम मैदानो से अलग कर दिया गया हे, साल मे दो मरतबा ईदो के मौके पर मस्जिद जाना ही इस्लाम हे और कुछ तौफीक हुवी तो हफते मे जुमा के दिन भी आगये, और बस फिर पूरी जिन्दगी आजाद हे जैसे चाहे रहे, जिस तरह चाहे कमाये, जहा चाहे खर्च करे, हालाकि जिन्दगी के हर-हर मौके पर इस्लाम इंसान की पूरी-पूरी रेहनुमाई करता हे उसे रास्ता बताता हे, कायनात के पैदा करने वाले के हुकमो और इसके रसूल ﷺ के रास्ते पर चलकर दुनिया मे कामयाबी अता करता हे और आखीरत की भी सादत से नवाजता हे, लेकिन बहुत बेदरदी के साथ इन सब मैदानो से इस्लाम को अलग रखा जा

रहा हे, और हद ये हे कि इस्लाम के पांच बुनियादी अरकान जिन पर इस्लाम की बुनियाद खडी हे उनसे भी गफलत बरती जा रही हे, दीन का सबसे अहम फरीजा नमाज का जो हाल हे वो हमारे सामने हे, कितने परसनट लोग पांच वकत की नमाजे पढने वाले हे? जकात कितने लोग अदा करते हे? रमजान के मुकद्दस और बरकत वाले महीने का एहतिराम रोजा रखकर क्या सभी लोग करते हे? और हज का भी यही हाल हे, ये सब हे और फिर दूसरी तरफ देखिये कितने लोग हे जो इन हालात को देखकर बेचैनी मेहसूस करने लगते हे और भलायी का हुकम देने और बुरायी से रोकने के लिए उठ खडे होते हे कितने लोग हे जो इन हालत मे बुरइयो को रोकने की जिम्मेदारी अदा कर रहे हे?

मौजूदा हालात मे करने के कुछ काम- मौजूदा हालात का पक्का और मजबूत हल बस यही काम हे, गुनाहो से बचा जाए, अल्लाह की फरमाबरदारी जिन्दगी के हर शोबे मे की जाए, अपनी जिस बद आमालीयो और बुरे करतुत्तो के सब्ब से मुश्किले पैदा हुवी हे

उनसे बचा जाए और अपने जबरदस्त अल्लाह खालिके कायनात से दुवाये की जाए, उसके फेसले के बगैर कुछ नही हो सकता, ना दुश्मन अपनी साजिशो मे कामयाब हो सकता हे और इस्से दुवाये कर के सख्त हालात, आफत्तो और मुश्किलो से नजात हासिल की जाए, हासिल ये कि इन हालात के जाहिरी अस्बाब मे ज्यादा सर खपाने के बजाय इस सर चशमा पर नजर जमाली जाए जहा से उन हालात के पैदा किये जाने के फेसले होते हे. बेशक नाजूक हालात मे सच्ची तौबा और इस्तिगफार के इलावा नीचे आने वाले आमाल भी मुसीबतो और मुश्किलो को दूर करने मे बहुत असर रखते बे-शक अल्लाह ही हालात को पलटने वाले हे.

(१) फर्ज नमाजो का एहतिमाम और नफल नमाजो की ज्यादती, हदीस मे आता हे नबी को जब भी कोई मुश्किल पेश आती तो फौरन नमाज की तरफ मुतवज्जा हो जाते, हुजूर صلی اللہ علیہ وسلم तो हवा के तेज हो जाने पर भी अल्लाह के अजाब से डर जाते, और नमाज पढकर अल्लाह के सामने गिडगिडाते कि कही

ये हवा आंधी बन कर अजाब की शक्ल ना इखतियार करले, कुरान मे नमाज के जरीये मदद हासिल करने का हुकम दिया गया हे,

सुरे बकरा|153 ए ईमान वालो सब्र और नमाज से मदद हासिल करो, लेकिन मौजूदा दौर के मुस्लमान को सख्त हालात और मुश्किलो मे नमाज का ख्याल भी आता ने की कुदरत रखता हे.

(२) मुसीबतो और मुश्किलो को दूर करने मे सदका करना भी बहुत कारगर हे, सदका व खेरात करने से भी बलायें दूर होती हे, हुजूर ﷺ का इरशाद हे बेशक सदका बलाओ को दूर करता हे, इस लिए मुस्लमानो को इस की पाबंदी करनी चाहिए की खतरनाक हालात मे खास तौर पर पर पाबंदी से जकात अदा करने के अलावा नफ्ली सदका और खैरात भी करते करते रहे.

गरीबों और मोहताजों की मदद करे, बेवाओ यतीमो का सहारा बने, खेरात करना जहा तक हो सके छुप कर करे, राजदारी और छुप कर सदका करना
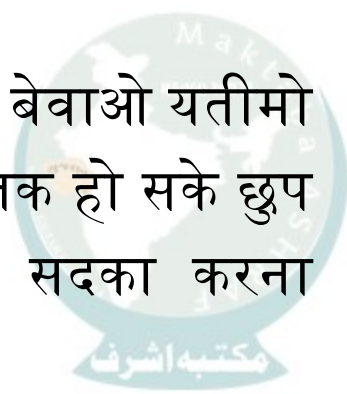
अल्लाह के यहा ज्यादा मकबूल हे जैसा कि आयतो और हदीसो से मालूम होता हे.

(३) हजरत युनुस अल. ने मछली के पेट मे सख्त अन्धेरो के अन्दर अल्लाह से जिन अलफाज मे फरयाद की थी उसे बुजरूगोने मुसीबतो को दूर करने मे बहुत मोअस्सिर पाया हे कुरान मे हजरत युनुस अल. की ये दुवा और पुकार मौजूद हे, वो ये हे,

तर्जुमा: आपके सिवा कोई माबूद नही आपकी जात पाकीजा हे, बे-शक मे जालिमो मेसे हु.

तरजुमे का पूरा ध्यान कर के गमजदा दिल, और बेचारगी के एहसास के साथ जिस कदर इस दुवा की कसरत की जाए उसी कदर अल्लाह की रहमत मुतवज्जा होती हे और खतरो के बादल छट जाते हे.

(४) हुकूक उल-इबाद के अदा करने का खुसूसी एहतिमाम क्या जाए, किसी का जानी या माली हक जिम्मा मे बाकी हो तो उसे जल्दी अदा कर के फारिग होने की फिक्र की जाए.